माह : अक्टूबर
ग्यारवां अंक

प्रकाशन वर्ष 2018
भाषा : हिन्दी

भक्ति दर्शन
भक्ति का महासंगम

॥भक्ति दर्शिनी॥

भक्ति का महासंगम

शुभ नवरात्री

शुभ नवरात्री - विजयादशमी - पापांकुशा एकादशी - राधाष्टमी महोत्सव
शरद पूर्णिमा - मीराबाई जयंती - करवा चौथ - अक्टूबर 2018 मासिक राशिफल

शुभ नवरात्री

नवरात्री मुहूर्त :–

10 अक्टूबर 2018 (बुधवार)
घटस्थापना मुहूर्त : 06:22 से 07:25 (10 अक्टूबर 2018)
प्रतिपदा तिथि प्रारम्भ : 09:16 (09 अक्टूबर 2018)
प्रतिपदा तिथि समाप्त : 07:25 (10 अक्टूबर 2018)
तिथि : 16, अश्विन शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा

हिन्दू धर्म में नवरात्री का एक अलग ही उत्साह देखने को मिलता है, यह पर्व साल में दो बार मनाया जाता है। जिसमे नौ दिनों तक माता दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है। शारदीय नवरात्र आश्विन माह के शुक्ल पक्ष में आते हैं। इस वर्ष यह 10 अक्टूबर 2018 से शुरू होकर 18 अक्टूबर तक चलेंगे। इन नौ दिनों में माता दुर्गा की पूजा करने से घर में सुख शांति, यश, वैभव तथा मान सम्मान आदि का वास होता है।

नवरात्रि के अवसर पर नौ दिनों में माता दुर्गा के अन्य नौ रूपों की प्रत्येक दिन क्रमशः पूजा होती है– सर्वप्रथम दिन माँ शैलपुत्री, द्वितीय दिन माँ ब्रह्मचारिणी, तृतीय दिन माँ चंद्रघंटा, चतुर्थ दिन माँ कुष्मांडा, पंचम दिन माँ स्कंदमाता, षष्टम दिन माँ कात्यायिनी, सप्तम दिन माँ कालरात्रि, अष्टम दिन माँ महागौरी तथा नवम दिन माँ सिद्धदात्री की पूजा की जाती है। इस व्रत को महिलाओं के साथ साथ पुरुष भी बड़ी श्रद्धा के साथ रखते हैं।

देवी पूजन की विधि :–

माता की पूजा का विशेष विधान होता है जिसका इन नौ दिनों में बहुत ध्यान रखना चाहिए। माता की प्रतीमा की स्थापना एक चौकी पर की जाती है, जिस पर एक लाल या पीला कपडा बिछाकर उस पर मूर्ति को रखना चाहिए। पूर्ण विधि विधान से कलश की स्थापना करनी चाहिए, दुर्गा सप्तशती का पाठ भी करना उत्तम है। माता को चढाने के लिए नारियल, पान, सुपारी, लौंग, इलायची, श्रृंगार पिटारी आदि की व्यवस्था भी करनी चाहिए।

नवरात्री में अखंड दीपक का जलना अत्यंत शुभ माना जाता है, याद रखिये की अखंड ज्योति के लिए मिटटी, ताँबे अथवा पीतल का दिया लेना चाहिए और इसे चावल की ढेरी के ऊपर रखना चाहिए। दिया घी अथवा तिल के तेल का ही जलाना चाहिए। प्रत्येक दिन पूजा के बाद हवन कराना भी आवश्यक है, इस से पूजा का पूर्ण फल साधक को मिलता है। इसके अलावा माता को भोग के लिए हलवा पूरी, मिष्ठान इत्यादि चढ़ाना चाहिए।

नवरात्री के व्रत में ध्यान रखने योग्य बातें :–

- माता दुर्गा पर तुलसी पत्र तथा दूर्वा घास नहीं चढ़ाना चाहिए।
- माता की प्रतिमा अथवा तस्वीर पर शेर आक्रामक मुद्रा में नहीं होना चाहिए।
- यदि घर पर अखंड ज्योत जलाई है, तो घर को अकेला छोड़ कर न जाएँ। घर पर कोई न कोई मौजूद होना चाहिए।
- जूट अथवा ऊँन के आसान पर बैठकर ही पूजा करें।
- ज्योति प्रतिमा के बायीं ओर तथा यदि ज्वार बोये हैं तो वह प्रतिमा के दायीं ओर रखने चाहिए।

नौ दिन इन बातों का रखिये खास ख्याल :–

- नवरात्री के दौरान घर पर कोई भी बाल, दाढ़ी–मूंछ तथा नाखून आदि न कटायें।
- नवरात्री में लहसुन–प्याज, मांस–मदिरा आदि का परहेज अत्यंत आवश्यक है।
- व्रत रखने वाले लोगों को चमड़ा किसी भी प्रकार इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, और न ही काले रंग के कपडे पहनने चाहिए।
- व्रत के नौ दिनों में खाने के लिए अनाज तथा नमक का प्रयोग नहीं करना चाहिए। साधारण नमक के स्थान पर सेंधा नमक इस्तेमाल कर लीजिये।
- नवरात्री के समय ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

विजयादशमी

विजयादशमी मुहूर्त :–

19 अक्टूबर 2018, शुक्रवार
विजय मुहूर्त : 13:58 से 14:43
तिथिः अश्विन शुक्ल पक्ष दशमी

बुराई पर अच्छाई की विजयी का प्रतीक है विजयादशमी, इसे दशहरे के नाम से जाना जाता है क्योकि यह दशमी तिथि पर पड़ता है। विजयादशमी को जीत के उत्सव के रूप में हर साल मनाया जाता है, इसे मनाने के तरीके भिन्न हो सकते हैं। क्योकि किसानों के लिए यह उनकी नई फसल के आने की सफलता के तौर पर देखि जाती है तो कुछ लोग इस दिन अस्त्र–शस्त्र की पूजा करते हैं। पुराने समय में राजा महाराजा भी अपने शस्त्रों की पूजा करवाते थे, जो उनकी जीत और खुशहाली का प्रतीक होती थी।

विजयादशमी का महत्व :–

वैसे तो हमने कह दिया की यह बुराई पर अच्छे की जीत का प्रतीक है, पर वो बुराइयां हैं क्या? इसका उत्तर है किसी भी प्रकार की बुराई जैसे क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार तथा आलस्य आदि पर जीत। यह एक आत्म विजयी होती है, अपनी इन बुराइयों से हमें स्वयं लड़ना होता है। क्योकि जब हम अपनी बुराइयों को हरा पाएंगे तभी हम समाज की बुराइयों को हरा सकने के काबिल बन सकते हैं। विजयादशमी का पर्व अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को मनाया जाता है। नवरात्री के पावन नौ दिनों के बाद यह दशमी को दशहरा के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष यह, 18 अक्टूबर 2018 दिन गुरुवार को मनाया जायेगा।

दशहरा पर्व की पौराणिक कथा :–

वैसे तो विजयदशमी को मनाने के कई कारण हैं, किन्तु इस से जुड़ी एक कथा सबसे ज्यादा प्रचलित है। यह कथा जुड़ी है रामायण काल से, जिसमे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने लंका राज रावण को मार कर उसे पराजित किया था।

रावण राक्षस और ब्राह्मण दोनों ही था, क्योकि उसके पिता एक ब्राह्मण और माता एक राक्षसी थी। इस कारण वह बुद्धिमान होने के साथ साथ अत्यंत ताकतवर भी था। और धीरे धीरे उसने अपनी शक्तियां इतनी बढ़ा लीं कि उसे परास्त करना देवताओं के लिए भी असंभव हो गया। उसे कई देवताओं से वरदान प्राप्त थे, और इस कारण उसका अहंकार बहुत बढ़ गया। उसका अहंकार तोड़ने के लिए भगवान् विष्णु ने धरती पर श्री राम के रूप में जन्म लिया और इस मानव रूप में उन्होंने धर्म और निति की राह पर चल कर रावण जैसे योद्धा को परास्त कर दिया। श्री राम के पास कोई दिव्य शक्तियां नहीं थीं, केवल उनके गुरु का दिया हुआ ज्ञान और उनकी अपनी मेहनत से सृजित की हुई धनुर्विद्या थी। किन्तु धर्म और सत्य से उन्हें इतनी अधिक शक्तियां मिली की रावण की विशाल सेना, जिसमे मायावी राक्षस और कई भयंकर योद्धा शामिल थे, एक एक कर मारे गए।

और इसी कारण उनकी यह जीत इतिहास के पन्नों में अमर हो गयी। उनकी इसी जीत को मानाने के लिए दशहरा का त्यौहार मनाया जाता है।

कैसे मनाया जाता है दशहरा? :–

दशहरा मनाने का स्वरुप समय के साथ साथ बहुत बदल गया है। पुराने समय में साधारण सा रावण का पुतला बनाया जाता था, और उसके साथ राम लीला का मंचन होता था। जिससे लोग याद रख सकें की बुराई का अंजाम क्या होता है। और अंत में रावण को जला दिया जाता था।

किन्तु आज के आधुनिक दौर में दिखावा और प्रतिस्पर्धा बढ़ गयी है। रामलीला का मंचन आज भी किया जाता है और यह काफी समय पूर्व ही शुरू हो जाता है। और विजयदशमी के दिन रावण का बड़ा सा पुतला उसके परिवार के साथ (जिसमे सामान्यतया मेघनाथ और कुम्भकरण होते हैं) तैयार किया जाता है। और फिर आतिशबाजी के बीच उसे जलाया जाता है। इस आधुनिकीकरण से दुर्घटनाएं आम हो गयी हैं और प्रदूषण का स्तर भी बहुत बढ़ गया है। इसमें कोई दो राय नहीं की आज का समाज इन्ही दिखावों से तंग आ कर इन परम्पराओं से दूर होता जा रहा है। इसलिए कोशिश की जनि चाहिए की त्योहारों का असल रूप न बिगाड़ा जाये, जिससे भविष्य में बच्चे अपनी रीती–रिवाजों से दूर न जाएँ।

पापांकुशा एकादशी

पापांकुशा एकादशी व्रत मुहूर्त :–

एकादशी : 23 अक्टूबर 2018, शनिवार
एकादशी पारण समय : 06:30 से 08:44 (24 अक्टूबर 2018)
एकादशी तिथि प्रारम्भ : 11:01 बजे (22 अक्टूबर 2018)
एकादशी तिथि समाप्त : 09:49 बजे (23 अक्टूबर 2018)

पापांकुशा एकादशी महत्व :–

पापांकुशा एकादशी का व्रत आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को होता है। इस दिन भगवान विष्णु के पद्मनाभ रूप की पूजा होती है, इस एकादशी के व्रत के पुण्यस्वरूप मनुष्य को उसके पापों से मुक्ति मिलती है तथा यमलोक के भय से भी छुटकारा मिलता है। उसे श्री हरी विष्णु के धाम में स्थान मिलता है तथा मृत्युलोक के जन्म के बंधनों से मुक्ति मिलती है। इस एकादशी के व्रत से दस हजार यज्ञों के बराबर फल मिलता है। जो पुण्य ऋषि मुनि कठिन तपस्या से अर्जित करते हैं, वही पुण्य इस व्रत से सहज ही प्राप्त हो जाते हैं। इस व्रत में दान का अत्यधिक महत्व है, दान देने से आप अपने दुःख भी दान कर देते हैं। इसलिए आप एकादशी के दिन वस्त्र, गाय, अनाज आदि का दान दे सकते हैं।

पापाकुंशा एकादशी व्रत विधि :–

प्रत्येक एकादशी की भांति इस एकादशी में भी दशमी तिथि से ही व्रत के नियमों का पालन शुरू कर देना चाहिए।

अर्थात दशमी तिथि से ही गेहूं, उड़द, मूंग, चना आदि अनाजों का सेवन नहीं करना चाहिए। दशमी तिथि को तामसिक प्रवृत्ति के भोजन तज्य हैं अर्थात मांस, मदिरा, लहसुन और प्याज जैसे गरिष्ठ भोजन ग्रहण नहीं करने चाहिए।

एकादशी की तिथि को प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व उठकर नित्यकर्म आदि से निपट कर स्नान करना चाहिए तथा इसके पश्चात् स्वच्छ स्थान पर कलश स्थापना कर एक चौकी पर लाल कपडा बिछा कर विष्णु जी की प्रतिमा स्थापित करनी चाहिए। तथा श्री हरी का षोडशोपचार विधि से पूजन अर्चन करना चाहिए। इसके लिए घी का दीपक, धूप, रोली, अक्षत, पुष्प, मेवे, फल आदि श्री हरी को अर्पित करने चाहिए। इन सब के बाद विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ तथा पापांकुशा एकादशी की व्रत कथा पढ़नी चाहिए।

व्रत का पारण द्वादशी के दिन ब्राह्मणो को भोजन करा कर करना चाहिए, किन्तु यदि आप पूर्ण व्रत निराहार रखने में सक्षम न हों तब एकादशी के दिन एक समय भोजन कर सकते हैं।

पापांकुशा एकादशी व्रत कथा :–

प्राचीन काल में एक बहेलिया था जिसका नाम था क्रोधन, वह विंध्य के पर्वत में रहा करता था। अपने नाम की ही भांति वह अत्यंत क्रूर था, उसने अपना सारा जीवन नितांत पापों में व्यतीत कर दिया। किन्तु जब उसका अंत समय आया तो उसके मन में मृत्यु का भय जाग उठा, उसे सोते जागते भयानक यमदूत दिखाई देने लगे। इस से घबराकर वह एक दिन ऋषि अंगिरा के आश्रम आ गया और उनसे हाथ जोड़कर कहने लगा–हे ऋषिवर! मैंने अपना पूर्ण जीवन केवल पाप कर्मों में ही व्यतीत कर दिया। मेरा उद्धार हो सके इसके लिए मेरे पास कोई संचित पुण्य नहीं हैं। क्या कोई उपाय है की अंत समय में भी मेरा उद्धार हो सके और मोक्ष की प्राप्ति हो सके। ऋषि अंगीरा ने सारी बात सुनकर कहा की केवल पापांकुश एकादशी का व्रत करने से ही तुम्हे तुम्हारे पापों से मुक्ति मिल सकती है।

यह सुनकर क्रोधन ने बड़ी तन्मयता और श्रद्धा से पापांकुश एकादशी का व्रत किया। महर्षि के कहे अनुसार ही उसे उसके किये पापों से मुक्ति मिल गयी, उसका मन निर्मल हो गया और उसे बैकुंठ धाम की प्राप्ति हुई।

राधाष्टमी महोत्सव

श्री राधावल्लभ में राधाष्टमी उत्सव समारोह :–

राधावल्लभ मंदिर में श्री राधा जी का जन्मदिन अर्थात राधाष्टमी का बहुत बड़ा जश्न मना, जो पूरे नौ दिन चला। यह उत्सव भाद्रपद की शुक्ल पंचमी के दिन शुरू हुआ, जिसमें मंदिर में भक्तों के द्वारा बधाई गीत गाये गए। उत्सव के दौरान राधा–कृष्ण के जोड़े को भव्य रूप से सजाया गया था, और शाम के समय चार दिनों तक राधा–कृष्ण की अन्य गोपियों सहित झांकी भी निकाली गयी। पवित्र जोड़े को गोपियों सहित एक सुन्दर रथ में बैठाया गया था, जिसके पीछे पीछे कई संत समाज नाचता झूमता चल रहा था। इस झांकी में कई बैंड पार्टियां सम्मिलित हुई, जिन्होंने अपनी सुन्दर भक्ति धुनों में हजारों भक्तों को झूमने पर मजबूर कर दिया। यह झांकी मंदिर से शुरू होकर वृन्दावन की गलियों और मुख्य सड़क पर घूमती हुई मध्यरात्रि तक रस मंडल पहुँचती थी।

श्री राधावल्लभ का पवित्र 'पंचामृत' स्नान :–

8 वें दिन, सुबह मंगला आरती से पहले, मंदिर के संगीतकारों ने बधाई गीत (बधाई) और ''दधि–कांडो'' का गायन किया। इसके बाद राधावल्लभ का पांच अमृत, जिसमे– दूध, दही, शहद, घी तथा चीनी शामिल हैं, से स्नान कराया गया और अंत में यमुना के पवित्र जल से उनका अभिषेक किया गया।

राधाष्टमी महोत्सव पर तैयार 'भोग' :–

महोत्सव में श्रृंगार भोग के लिए अनेक तरह के स्वादिष्ट व्यंजन तैयार किये गए जैसे– अनेक प्रकार के लड्डू, गुजिया, नारियल, मखाने, कमल बीज, खरबूजे के बीज, पंजीरी, मठरी, शकरपारे आदि। इस दिन बना राजभोग भी अत्यंत भव्य था, जिसमे ''साखरि'' (चावल के विभिन्न प्रकार जैसे– भात, जीरा भात, मेवा भात, बूरा भात, केसर भात, दही भात आदि), कढ़ी, विभिन्न प्रकार की रोटियां, दाल, विभिन्न प्रकार की सब्जियां, खीर आदि शामिल थे। ये सभी रीती रिवाजों के अनुसार प्रत्येक दिन प्रसाद में बनाया जाता था।

दूध और दही के साथ ''दधि कांडो '' नृत्य :–

राधाष्टमी के दिन दूध, दही और हल्दी के मिश्रण से भक्तों के ऊपर प्रेम वर्षा की गयी। जिसमे भीग कर प्रत्येक भक्त झूम रहा था और राधा जी के जन्म का उत्सव मना रहा था। सभी भक्त एक स्वर में बोल रहे थे– ''राधा जी ने – जनम लियो है'', ''हे राधा! हम भक्तों पर अपनी कृपा की वर्षा करना''। और ऐसे ही राधा–कृष्ण के जयकारों के बीच राधाष्टमी महोत्सव का आयोजन समाप्त हुआ।

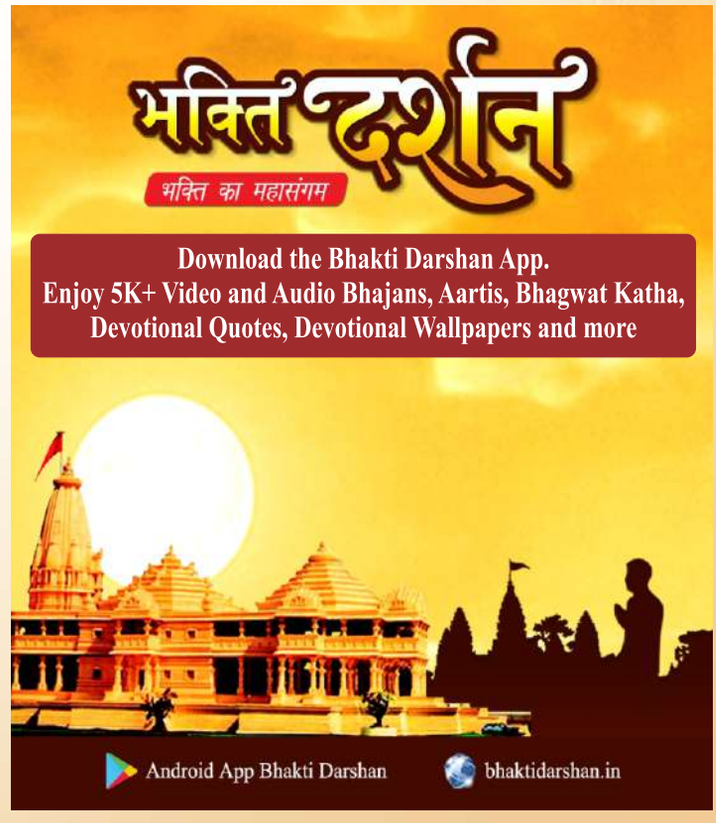

शरद पूर्णिमा

शरद पूर्णिमा व्रत मुहूर्त :–

23 अक्टूबर 2018 (मंगलवार)
शरद पूर्णिमा पर चंद्रोदय : 17:14
पूर्णिमा तिथि प्रारम्भ : 22:36 (23 अक्टूबर 2018)
पूर्णिमा तिथि समाप्त : 22:14 (24 अक्टूबर 2018)

सबसे बड़ी पूर्णिमा शरद पूर्णिमा आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाई जाती है। इसे रास पूर्णिमा भी कहा जाता है, क्योकि इस दिन श्री कृष्ण ने गोपियों के साथ महारास रचाई थी। इस पूर्णिमा को कोजागर व्रत तथा कौमुदी व्रत भी कहा जाता है, इस दिन चंद्र देव के साथ साथ माँ लक्ष्मी जी की पूजा भी होती है।

शरद पूर्णिमा की विशेषता :–

यह व्रत अंत व्रतों से एकदम अलग है तथा कुछ विशेष भी, क्योकि यह व्रत शरद ऋतू में होता है जिस समय मौसम बहुत साफ रहता है। इस ऋतू में न आकाश बादलों से भरा रहता है और न ही कोई धूल वायु में उड़ रही होती है। ऐसे समय में, एक स्वच्छ वातावरण में चंद्र की कलायुक्त किरणें यदि शरीर पर पड़ें तो यह अत्यंत शुभ होती है। शरद पूर्णिमा की रात्रि चाँद अपनी सोलह कलाओं से परिपूर्ण होता है और इस में अत्यंत प्रभावशाली गुण समाये होते हैं। इस रात्रि चन्द्रमा दिव्य गुण से युक्त होकर अपनी किरणों से पृथ्वी पर भी अपनी कृपा बरसाते हैं। यह किरणें अमृत समान होती हैं, और रात्रि में यह अमृत वर्षा के सामान गुणकारी होती है।

रात्रि जागरण का महत्त्व :–

शरद पूर्णिमा केवल चंद्र देव की गुणकारी किरणों के कारण ही नहीं बल्कि माँ लक्ष्मी के कारण भी अत्यंत शुभ मानी जाती है। माना जाता है की इस दिन माँ लक्ष्मी बैकुंठ धाम से पृथ्वी पर भ्रमण करने आती हैं, इसलिए इस दिन रात्रि जागरण करना आवश्यक माना गया है। क्योकि माता लक्ष्मी रात्रि के समय ही विचरण करतीं हैं, और ऐसे समय में कोई जाग कर उनका पूजन अर्चन कर रहा हो तो वे प्रसन्न होकर उसका घर धन सम्पदा तथा वैभव से भर देतीं हैं।

रात्रि के समय जागरण करने का एक वैज्ञानिक तथ्य भी है, इस दिन कम कपड़ों में चन्द्रमा के सामने घूमने से चन्द्रमा

की चांदनी किरणें हमारे शरीर पर पड़ती हैं और इससे वह विशेष ऊर्जा हमारे शरीर में प्रवेश कर जाती है।

पूजा की विधि :–

इस पूजन को रात्रि के समय जब चन्द्रमा की चांदनी धरती पर बिखरी हो उस समय करना उपयुक्त माना गया है। सबसे पहले चन्द्रमा की पूजा करनी चाहिए। रात्रि के समय जब चाँद निकल आये, तो पानी का अर्घ्य देना चाहिए, उसके बाद धूप, दीप और फल आदि से उनका पूजन करें, तत्पश्चात आरती करें। इस रात को खीर बनाकर खुले आसमान में चाँद की चांदनी के तले रखा जाता है, क्योकि इस दिन चंद्रमा से दिव्य रस झरता है, जो अनेक रोगों में किसी भी दवा से अधिक काम करता है।

चंद्र पूजन के बाद माँ लक्ष्मी की विधिपूर्ण तरीके से पूजा की जाती है। पूजा में पानी से भरा कलश अवश्य रखा होना चाहिए, और माता लक्ष्मी की पूजा में एक सुपारी भी पान सहित रखें। सम्पूर्ण पूजा होने के पश्चात सुपारी को उठाकर उसमे एक लाल रक्षा धागा लपेट लें और उसका भी अक्षत से पूजन कर अपनी तिजोरी अथवा पर्स में रख लें। इस से आपकी तिजोरी सदा धन से लदी रहेगी और कभी धन की कमी नहीं आएगी।

क्या कहता है विज्ञान :–

आखिर कैसे सोलह कलाओं से युक्त चंद्र हमको अपनी संजीवनी देता है, इस प्रश्न का उत्तर विज्ञान हमे देता है। शरद पूर्णिमा के रात्रि में चंद्र हमारी पृथ्वी के बहुत पास होता है और इसलिए उसके प्रकाश में उपस्थित दिव्य तत्व सीधे धरती पर पड़ते हैं। और इस दिन खाने पीने की चीजें खुले आसमान के नीचे रखने से चन्द्रमा की किरणे सीधे उन पर

पड़ती है जिस से वह किरणे उसमे गिरती हैं और हमारे खाने को भी दिव्य बना देती हैं, और यह खाना एक औषधि बन जाता है।

शरद पूर्णिमा की व्रत कथा :–

एक साहूकार था जिसकी दो पुत्रियां थीं। दोनों ही कन्यायें अत्यंत सुन्दर और कुशल थीं। दोनों युवावस्था से पूर्णिमा का व्रत किया करतीं थी, बड़ी बहन तो पूर्ण व्रत श्रद्धा से करती किन्तु छोटी बहन का मन पूर्णतया इसमें नहीं लग पाता। दोनों विवाह पश्चात भी उसी प्रकार व्रत किया करतीं थी, कुछ समय बाद बड़ी बहन को पुत्र प्राप्त हुआ। उसके कुछ समय बाद छोटी बहन की भी संतान हुई किन्तु उसकी मृत्यु हो गयी। इसी प्रकार बड़ी बहन को एक पुत्री भी प्राप्त हुई, किन्तु छोटी बहन को जो भी संतान होती उसकी शीघ्र ही मृत्यु हो जाती। एक दिन छोटी बहन ने पंडित जी से पुछा कि उसके साथ ऐसा अन्याय क्यों होता है। तब पंडित जी ने बताया जब कोई व्रत अधूरा किया जाता है, तभी ऐसे कष्ट प्राप्त होते हैं। अतः तुम पूर्ण व्रत श्रद्धा से करो, तुम्हे भी संतान का सुख मिलेगा।

उनकी बात मानकर उसने इस बार का पूर्णिमा व्रत पूरी श्रद्धा से किया, कुछ समय बाद उसकी एक संतान हुई। किन्तु वह भी मर गयी, छोटी बहन ने मृत बच्चे को एक पीड़े में लिटाया और अपनी बड़ी बहन को बुलाया। बड़ी बहन उसके घर आयी तो उसने उसे बैठने के लिए वही पीड़ा जिसमे बच्चा था, उसमे बैठने को कहा। बड़ी बहन अनजान थी, इसलिए उस पर बैठने लगी। किन्तु जैसे ही वह बच्चे को स्पर्श हुई, वह जोर जोर से रोने लगा। बड़ी बहन को क्रोध आ गया, उसने कहा तुम मुझे उस बच्चे के ऊपर बैठाकर उसे मारना चाहती थी क्या, जिससे मेरे ऊपर दोष लगे। उसने कहा नहीं दीदी, ये बच्चा तो मरा हुआ था आपके पुण्यों से ये जीवित हुआ है। मैं पूर्णिमा का आधा अधूरा व्रत किया करती थी जिससे मेरी संताने मर जाती थी। किन्तु तुमने सदैव पूर्ण व्रत किया जिससे तुम्हारे पुण्य संचित हुए और आज उसी के फलस्वरूप मेरा पुत्र जीवित हुआ। इसके बाद उसने सारे शहर में ये बात प्रसिद्द कर दी की पूर्णिमा का व्रत संतान की प्राप्ति के लिए सर्वोत्तम व्रत है।

मीराबाई जयंती

24 अक्टूबर 2018 (बुधवार)
520 वीं जयंती (लगभग)
पूर्णिमा तिथि प्रारम्भ : 22:36 (23 अक्टूबर 2018)
पूर्णिमा तिथि समाप्त : 22:14 (24 अक्टूबर 2018)

मीराबाई कृष्ण भक्ति शाखा की अत्यंत महत्वपूर्ण कवियित्री हैं। उनकी कृष्ण भक्ति अमिट और अमर है, और उनकी कृतियों ने मीराबाई को भी अमर बना दिया। मीराबाई का जन्म संवत् 1504 विक्रमी में मेड़ता में रतन सिंह जी के घर पर हुआ था। मीराबाई को बचपन में उनकी माता ने बोल दिया की तेरे पति श्री कृष्ण हैं। तब से मीराबाई ने श्री कृष्ण को अपना सब कुछ मान लिया, वे उनके लिए भजन गाती थीं, उनके सामने घुंघरू पहन कर नाचतीं थीं।

बाद में उनका विवाह मेवाड़ के सिसोदिया राज परिवार में कर दिया गया। उदयपुर के महाराणा कुंवर भोज राज इनके पति थे, किन्तु विवाह के प्रथम दिन ही मीराबाई ने उन्हें बता किया की वे केवल कृष्ण को अपना पति मानती हैं। पहले तो उन्हें यह केवल परिहास लगा, किन्तु धीरे धीरे उन्होंने मीरा की कृष्ण के लिए भक्ति देखि और उन्हें विश्वास हो गया की मीरा केवल कृष्ण दीवानी हैं।

विवाह पश्चात मीरा का जीवन :–

ऐसे तो मीरा का विवाह राजकुल में हुआ था, जहाँ कुलदेवी दुर्गा की पूजा होती थी। किन्तु मीराबाई ने कृष्ण के अलावा किसी और की पूजा करने से मना कर दिया। वह घर का काम काज निपटाने के बाद घंटों मंदिर में बैठकर कृष्ण जी की मूर्ति के आगे भजन गाती थी, उनसे अपने सुख दुःख बांटती थीं। उनके इन कार्यों से उनके परिवार में उनके पति के अलावा बाकि सभी

लोग उनसे क्रोधित होने लगे थे।

कभी कभी मीरा कृष्ण भक्ति में तल्लीन होकर महल से बाहर निकल जाती तथा साधु संतों की टोली के साथ नाचने लगती थीं। किन्तु उनका इस तरह गलियों में नाचना उनके परिवार को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने कई प्रकार से मीरा बाई को दुःख देने शुरू कर दिए, उनका बाहर आना जाना बंद कर दिया।

पति की मृत्यु :–

कुछ समय पश्चात ही मीरा बाई के पति की एक युद्ध में मृत्यु हो गयी, परिवार वालों ने मीरा को सती होने के लिए जोर दिया। किन्तु मीरा बाई के अनुसार उनके पति श्री कृष्ण थे, इसलिए वे सती नहीं हुईं। और मीरा बाई ने चोरी छुपे मंदिरों में जाना और वहा भजन गाना शुरू कर दिया। बाद में परिवार वालों ने उनपर व्यभिचारिणी होने का आरोप लगा दिया, उस समय इस पाप की सजा मृत्युदंड होती थी। इसलिए महल में मीरा को भरी सभा में जहर पीने को दिया गया। मीराबाई ने कृष्ण का नाम लेकर वह जहर भी पी लिया और महल से चलीं गयी।

उनके भक्त उनके पीछे पीछे चल दिए, सबको लगा अब मीराबाई जीवित नहीं रहेंगी। किन्तु श्री कृष्ण की कृपा से उनपर जहर का कोई असर नहीं हुआ। किन्तु अपने परिवार की प्रताणनाओं से तंग आकर वह कृष्ण की मूर्ति में समा गयीं।

मीराबाई की आध्यात्मिक रचनाएँ :–

मीराबाई के गुरु संत रैदास थे जो कि एक निम्न कुल के थे। किन्तु मीराबाई ने उनके कुल की परवाह न करके उन्हें ही अपना गुरु मान लिया। इसका विरोध वहां के उच्च कुलीन ब्राह्मणों ने भी किया, किन्तु मीरा पर इन सब का कोई असर नहीं हुआ। मीराबाई ने उनसे वीणा बजाना तथा संगीत की शिक्षा भी प्राप्त की थी। मीरबाई ने राजस्थानी, ब्रज तथा गुजराती भाषाओँ में कई पदों की रचना की। उन्होंने कुल

चार ग्रंथों की रचना की, जो इस प्रकार हैं :–

1. **नरसी का मायरा**
2. **गीत गोविन्द टीका**
3. **राग गोविन्द**
4. **राग सोरठ**

करवा चौथ

करवा चौथ का मुहूर्त :–

27 अक्तूबर 2018 (शनिवार)
चंद्रोदय समय – 20:00
करवा चौथ पूजा मुहूर्त : 17:36 से 18:54 (1 घंटा 17 मिनट)
चतुर्थी तिथि आरंभ : 18:37 (27 अक्तूबर 2018)
चतुर्थी तिथि समाप्त : 16:54 (28 अक्तूबर 2018)

करवा चौथ हिन्दू भारतीय महिलाओं के लिए एक अत्यंत फलदायी व्रत है, इस व्रत के लिए महिलाएं बहुत उत्साहित रहतीं हैं। करवा चौथ स्त्री को सौभाग्यवती बनाये रखता है अर्थात इस व्रत से उनके पति को दीर्घायु प्राप्त होती है। यह व्रत कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है।

करवा चौथ की विशेषता :–

यह व्रत मुख्यतः उत्तरी भारत में मनाया जाता है, किन्तु इसके उत्तम फलों के कारण अब यह पूर्ण भारत में प्रचलित हो गया है। इस व्रत को केवल सौभाग्यवती स्त्रियां ही रख सकतीं हैं, तथा यह प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व 4 बजे से प्रारम्भ होता है तथा रात्रि में चंद्र दर्शन और पूजन के बाद संपन्न होता है। अखंड सौभाग्य के लिए स्त्रियों को यह व्रत रखकर गणेश जी की आराधना करनी चाहिए।

सामान्यतया यह व्रत निराहार तथा निर्जला ही किया जाता है, किन्तु आजकल स्त्रियां इसे अपने परिवार में चली प्रथा के अनुसार ही करतीं हैं। करवा चौथ के व्रत में स्त्रियां दिन भर गणेश जी, माता गौरी तथा शंकर की आराधना करतीं हैं तथा इसके बाद चौथ माता की कथा सुनती हैं। और

रात्रि होने पर चंद्र दर्शन के बाद ही अपने पति के हाथों से जल तथा भोजन ग्रहण करतीं हैं। यह व्रत 12 वर्ष अथवा 16 वर्ष तक ही रखा जाता है, किन्तु महिलाएं अपनी इच्छानुसार इस व्रत को आजीवन भी रखतीं हैं। अवधी पूर्ण होने के पश्चात अन्य व्रतों की ही भांति इस व्रत का भी उद्यापन किया जाता है।

करवा चौथ पूजन विधि :–

करवा चौथ के दिन स्त्रियों को सूर्योदय से पहले उठकर स्नान आदि कर लेना चाहिए और उसके बाद व्रत का संकल्प लेना चाहिए। प्रातःकाल 4 बजे से पहले ही सास द्वारा बनाई गयी अथवा भेजी गयी सरगी खानी चाहिए। सरगी में प्रायः मिष्ठान, हलवा, पूड़ी, सेवईं, फल, काजू इत्यादि श्रृंगार के सामान के साथ दी जाती है। सरगी में सास लहसुन तथा प्याज आदि से बने व्यंजन न दें, इस से व्रत का पालन नहीं होता। सरगी करने के बाद से ही निर्जला व्रत शुरू हो जाता है, इसके बाद सीधे रात्रि में ही व्रत पूर्ण होने के बाद भोजन किया जाता है।

इस दिन सारा दिन भगवान के भजन कीर्तन तथा पूजा में ही व्यतीत करना चाहिए। पीली मिटटी से गौरी तथा गणेश जी की स्थापना एक चौकी पर करनी चाहिए, तथा माता गौरी को सुहाग की सामग्री तथा चुनरी भेंट करनी चाहिए। पूजन में सदैव एक जल से भरा हुआ कलश रखें और वायना(भेंट) देने के लिए मिट्टी का टोंटीदार करवा लेना चाहिए। इस करवे में गेहूं तथा उसके ढक्कन में शक्कर का बूरा भर दें। तथा इसके ऊपर दक्षिणा रखें और इस करवे पर एक स्वस्तिक का चिह्न रोली से बनाएं।

अब ''नमः शिवायै शर्वाण्यै सौभाग्यं संतति शुभाम। प्रयच्छ भक्तियुक्तानां नारीणां हरवल्लभे॥'' इस मन्त्र के साथ गौरी तथा गणेश जी की पूजा करनी चाहिए, और फिर कथा पढ़नी अथवा सुननी चाहिए। कथा पूर्ण होने के बाद घर के बुजुर्गों के पैर छू कर उनसे आशीर्वाद लेना चाहिए। रात्रि में चंद्रोदय के पश्चात् छननी के प्रयोग से चंद्र को अर्घ्य दें और उसी से चंद्र दर्शन के बाद अपने पति का दर्शन करें। और अपने पति के पैर छूकर उनका भी आशीर्वाद लें और उनके हाथ से जल और प्रसाद ग्रहण करें।

अक्टूबर 2018 मासिक राशिफल

मेष (ARIES) :–

मेष राशि का स्वामी मंगल का संचार कर्म स्थान पर रहेगा अतः कार्य के प्रति आपका उत्साह बना रहेगा। कार्य के प्रति ऊर्जावान दिखेंगे। कार्यस्थल पर जोश बनाये रखे परन्तु जोश में होश न खोये कही आपके ऊपर भारी न पड़ जाए। अपने भाई–बंधुओं के सहयोग से बिगड़े कामों में सुधार होने की उम्मीद है। संतान के ऊपर व्यय करना पड़ सकता है।

ज्यादा गुस्सा एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य खराब हो सकता है अतः अपने क्रोध पर काबू रखे। दिनांक 11 से गुरु के अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य खराब हो सकता है एवं परिवार में कुछ मतभेद भी बनेंगे। स्थान परिवर्तन एवं दूर की यात्राएं होने से मन अशांत एवं असंतुष्ट हो सकता है। प्रेमी प्रेमिका का आपस में मनमुटाव हो सकता है खासकर शादी के प्रपोजल को लेकर।

लकी नंबरः 6, 8, 9 व 10
लकी कलरः लाल, ऑरेंज और सुनहरा पीला
लकी डेः गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार

वृष (TAURUS) :–

वृष राशि वालों के षष्ठ भाव में शुक्र ग्रह का संचार करने से स्वास्थ्य संबंधी परेशानी होगी। हॉस्पिटल का चक्कर लग सकता है। इस समय आपको ऋण लेना पड़ सकता है। आय कम और खर्च अधिक रहेगा। भाई बंधुओं से मतभेद हो सकता है।

आपके स्वभाव में तीक्ष्णता एवं उत्तेजना से बनते कामों मेंविघ्न उत्पन्न हो सकते हैं अतः अपनी उत्तेजना को अपने काबू में रखना ही अच्छा रहेगा। अनियोजित खर्च से बचें।

लड़ाई–झगड़ा हो सकता है अतः इससे बचे। परिस्थितियों में विशेष रूप से परिवर्तन होंगे। साझेदारी के कार्यों में मनमुटाव हो सकता है। नई नई समस्याएं उत्पन्न हो सकती है। परिवार में वैचारिक मतभेद एवं संतान संबंधी कुछ न कुछ चिंता बनी रहेगी।

लकी नंबरः 1, 3, 5, 7 और 9
लकी कलरः गुलाबी, क्रीम, सफेद, हरा और नीला
लकी डेः शुक्रवार

मिथुन (GEMINI) :–

यह महीना आप के लिए कुछ विशेष सौगात लेकर आ सकता है। यदि आप कुछ नया करने के लिए सोच रहे है तो बहुत अच्छा यदि नहीं हो तो कुछ नया करने के लिए कोई न कोई योजना अवश्य बनाये। यह समय रोमांस का भी है किसी हसीना से मिलकर आपका रोम रोम रोमांचित हो सकता है। आपका ज्यादा समय व्यवसायिक कार्यों में व्यतीत होगा।

धन लाभ और उन्नति के दरवाजे खुलेंगे। दिनांक 17 से पंचम भाव में सूर्य बुध शुक्र की एक साथ होने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। आय के साधन बनते रहेंगे। संतान या उनके कैरियर से संबंधी चिंता से आप परेशान रह सकते हैं। धार्मिक कार्यो में रुचि बढ़ेगी। जीवन साथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

लकी नंबरः 3 और 5
लकी कलरः पीला, हल्का नीला और सफेद
लकी डेः गुरुवार और बुधवार

कर्क (CANCER) :–

इस समय बुध व्यय भाव का स्वामी होकर चतुर्थ भाव में रहेगा परिणाम स्वरूप माता के साथ सम्बन्ध में कुछ तनाव, घर में रेनोवेशन या घर में परिवर्तन हो सकता है। कर्क राशि वाले जातक के लिए इस मास कारोबार में कमी रह सकती है। धन लाभ साधारण रहेगा अतः कोई विशेष खर्च की योजना न बनाये। परिवार में मनमुटाव सम्भव है। मन बुद्धि में हमेशा भ्रम की स्थिति बनी रहेगी । छोटी–छोटी बात को लेकर क्रोध बढ़ेगा।

संतान संबंधी कोई न कोई परेशानी आ सकती है। व्यर्थ की भागदौड़ बनी रहेगी। दिनांक 11 अक्टूबर से गुरु के राशि परिवर्तन होने से गुरु की दृष्टि लग्न, लाभ तथा भाग्य स्थान पर होने से भाग्य में उन्नति और प्रगति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

लकी नंबरः 2,5, 7 और 9
लकी कलरः लाल, क्रीम, सफेद और हल्का पीला
लकी डेः रविवार और सोमवार

सिंह (LEO) :–

इस महीना सिंह राशि का स्वामी सूर्य का संचार धन तथा सहज भाव में होगा इस कारण धनार्जन के लिए आपको कठिन मेहनत करनी पड़ेगी साथ ही आपको लघु यात्रा का भी योग बन रहा है। आपने जो योजना बनाया है उसमे आंशिक सफलता मिलेगी। धन लाभ सामान्य रहेगा। घर परिवार में कोई मांगलिक कार्य भी हो सकता है।

दिनांक 17 से अचानक यात्रा करना पड़ सकता है इसका लाभ शायद ही मिले। व्यर्थ का खर्च बढ़ेगा। वाहन आदि का क्रय विक्रय भी हो सकता है। नौकरी से भाग्योदय का योग बन रहा है। यदि शादी के योग्य हो गए है तो यह महीना आपके लिए शुभ है परिणय सूत्र में बंध सकते हैं।

लकी नंबरः 1, 3, 4 और 9
लकी कलरः लाल, पीला और गोल्डन
लकी डेः मंगलवार और बुधवार

कन्या (VIRGO) :–

कन्या राशिफल में अक्टूबर 2018 सूर्य बुध योग होने से बिगड़े कार्य में सुधार होगा। धन लाभ और प्रगति के मार्ग प्रशस्त होंगे। उत्तरार्ध भाग में भी मिश्रित फल मिलेंगे। इस समय अत्यधिक परिश्रम करने पर भी मनोनुकूल लाभ में कुछ कमी रहेगी। आपका अपने निकट के बंधुओं से कुछ तनाव की स्थिति रहेगी। महीना के उत्तरार्ध से आर्थिक उलझन आएँगी। खर्च अधिक के साथ साथ घरेलू परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। मन में अशांति एवं असंतुष्टता बनी रहेगी जिसके कारण क्रोध बढ़ सकता है।

यदि आप स्टूडेंट है और कोई परीक्षा दे रहे है तो संभल कर रहे। नवीन कार्य की योजना बनेगी परंतु क्रियान्वयन में अभी विलंब रहेगा। प्रॉपर्टी में कोइ इन्वेस्टमेंट हो सकता है। यदि आप विवाहित नहीं है तो विवाह के लिए अनुकूल समय है आप इस समय विवाह के लिए अपने प्रयास तेज कर दीजिये। शीघ्र ही विवाह का योग बन रहा है। इस महीना

आपको अपने आत्म विश्वास में कमी आ सकती है जो आपके व्यापार या कर्म क्षेत्र के लिए ठीक नहीं है अतः अपने आत्मविश्वास को बढ़ाये रखने में कोई कसर नहीं छोड़े।

लकी नंबरः 3, 6, 7 और 8
लकी कलरः सफेद, हल्का नीला और गुलाबी
लकी डेः बुधवार

तुला (LIBRA) :—

तुला राशि के जातक के लिए शुक्र वक्री होकर लग्न में होने से बाधाओं के बावजूद गुजारे योग आय के साधन बनते रहेंगे फिर भी अनियोजित खर्च से बचे रहे अन्यथा मानसिक तनाव हो सकता है। अधिक खर्च से परेशानी का अनुभव होगा। पराक्रम में वृद्धि होगी तथा व्यर्थ की भागदौड़ भी बनी रहेगी। यात्रा में चोट आदि का भय तथा माता पिता से मतभेद हो सकते हैं।

यात्रा करते समय सावधानी रखना बहुत ही जरुरी है क्योकि एक्सीडेंट का योग बन रहा है। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के सहयोग से कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। किसी कार्य के लिए पूर्व में किये गए प्रयास सार्थक सिद्ध होंगे। सरकारी क्षेत्र में सफलता के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। यदि आप नौकरी की तलाश में है तो अपना प्रयास तेज कर दीजिये गुरु की कर्म भाव पर दृष्टि नौकरी में सफलता दिला सकता है।

लकी नंबरः 3, 5 और 9
लकी कलरः लाल, पीला और गोल्डन
लकी डेः बुधवार और गुरुवार

वृश्चिक (SCORPIO) :—

मास अक्टूबर से परिस्थितियां धीरे–धीरे अनुकूल होंगी। अपने कठिन मेहनत से कुछ बिगड़े कार्यों में निश्चित ही सुधार होगा। अनियोजित खर्च भी होगा। नियोजित योजनाओं में विघ्न बाधाएं आ सकती है। परिवार में मतभेद हो सकता है तथा कठिन परिस्थितियों के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे।रखे हुए धन का व्यय होगा।

सरकारी नौकरी में है तथा रिश्वत भी लेते है तो संभल जाइये रिश्वत लेते हुए पकडे जा सकते है आपकी शिकायत गुप्त रूप से की जा सकती है। दिनांक 11 से गुरु का संचार होने से धर्म में अभिरुचि संतान संबंधी सुख तथा सोची योजनाओं में कामयाबी मिलेगी। शनि साढ़ेसाती के कारण विघ्न–बाधाएं रहेंगे।

लकी नंबरः 1, 2 और 7
लकी कलरः सफेद, हल्का नीला, गुलाबी और पीला
लकी डेः रविवार और सोमवार

धनु (SAGITTARIUS) :—

लग्नेश के व्यय भाव में होने से शारीरिक कष्ट सम्भव है। शुभ कार्यो में या अपने शरीर के ऊपर खर्च होगा। आपको ऋण भी लेना पड़ सकता है। विदेश जाने का योग बन रहा है। अत्यधिक परिश्रम करने पर व्यवसाय में वृद्धि होगी एवं धन की प्राप्ति होगी। बनते कार्यों में नई विघ्न–बाधाएं उत्पन्न होंगी। दिनांक 17 से भाग्य का स्वामी सूर्य अपने नीच राशि में होगा इस कारण सिरदर्द, नेतृत्व आदि का भय रहेगा। यदि सरकारी नौकरी में है तो संभल जाए।

लकी नंबरः 5, 6 और 9
लकी कलरः हल्का हरा, मल्टी कलर और पीला
लकी डेः बुधवार और शुक्रवार

मकर (CAPRICORN) :—

माह अक्टूबर में लाभ स्थान पर बुध गुरु का योग होने से विभिन्न आर्थिक योजनाओं को क्रियान्वित करने के संकेत मिलते हैं। व्ययेश गुरु के लाभ स्थान में होने से लाभ में कमी आएगी। सूर्य नीच अस्त होने से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ सकता है। संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद व्यवसाय में धन लाभ एवं पदोन्नति के योग हैं। शनि के व्यय स्थान में होने से अनियोजित खर्च का योग बन रहा है। शारीरिक कष्ट हो सकता है।

लकी नंबरः 6, 8 और 9
लकी कलरः सफेद, लाल और नीला
लकी डेः मंगलवार और शनिवार

कुंभ (AQUARIUS) :—

मास के पूर्वार्ध में घरेलू उलझने बढ़ेंगी जिसके कारण मानसिक रूप से परेशान रहेंगे। स्वास्थ्य को लेकर कुछ घबराहट हो सकती है परन्तु धीरे धीरे सब नॉर्मल हो जाएगा। अपने व्यवहार में संयम बरते। उत्तरार्ध में कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। कुछ सोची योजनाओं में कामयाबी मान सम्मान

में वृद्धि होगी। मांगलिक कार्यो में कार्यों पर खर्च अधिक होगा।

नए कार्य की योजना बनेगी परंतु क्रियान्वयन में अभी देर होगा। प्रॉपर्टी में कोइ इन्वेस्टमेंट हो सकता है। यदि आप स्टूडेंट है और कोई परीक्षा दे रहे है तो संभल कर रहे। खर्च अधिक के साथ साथ घरेलू परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। मन में अशांति एवं असंतुष्टता बनी रहेगी जिसके कारण गुस्सा बढ़ सकता है।

लकी नंबरः 2, 3, 5 और 9
लकी कलरः पीला और लाल
लकी डेः गुरुवार और शुक्रवार

मीन (PISCES) :—

मीन राशि का स्वामी ग्रह गुरु का संचार भाग्य स्थान में रहेगा इस कारण आप भविष्य की योजना को लेकर परेशान दिखेंगे परन्तु सब कुछ होते हुए भी आपकी आर्थिक समृद्धि तथा भाग्यवृद्धि होगी। आप बहुत मेहनत करेंगे और उसमे सफलता भी मिलेगी। निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। दिनांक 17 से स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना करना पर सकता है। कार्य के प्रति ऊर्जावान दिखेंगे। किसी से लड़ाई–झगड़ा न करे ऐसे अवसर आ सकते हैं। स्थान परिवर्तन तथा धार्मिक या व्यापारिक यात्रा का योग बन रहा है।

लकी नंबरः 1, 4 और 5
लकी कलरः पीला, गुलाबी, क्रीम और सफेद
लकी डेः गुरुवार और रविवार

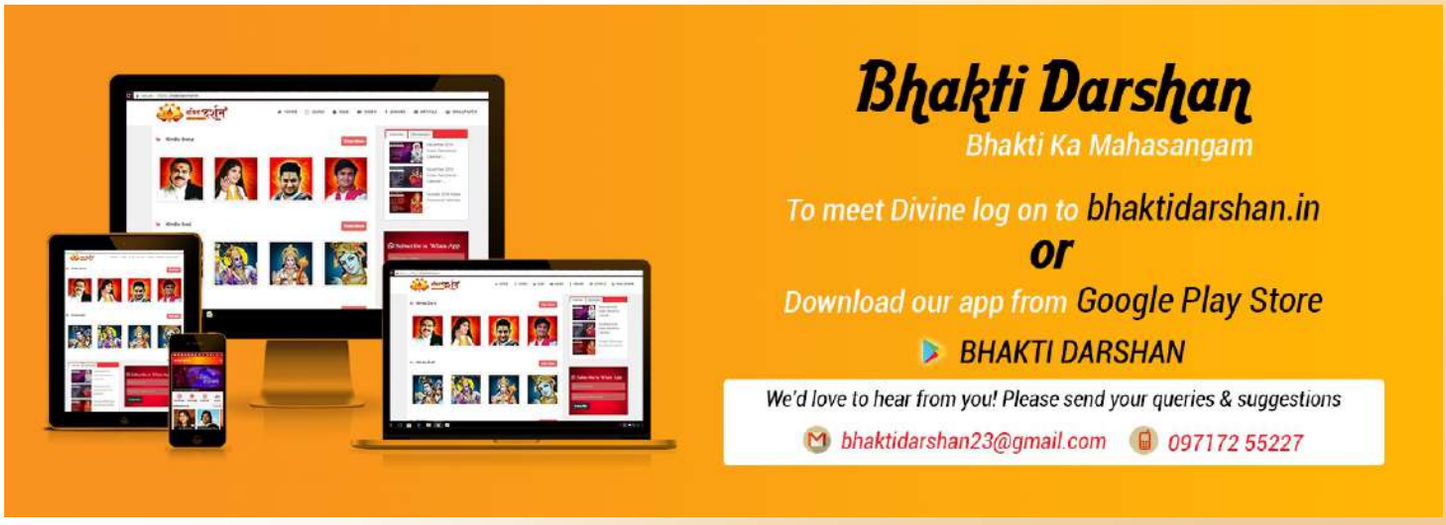

भक्ति दर्शन
भक्ति का महासंगम

॥ भक्ति दर्शन ॥

भक्ति का महासंगम

DOWNLOAD THE BHAKTI DARSHAN APP.

ENJOY 5K+ VIDEO AND AUDIO BHAJANS, AARTIS, BHAGWAT KATHA, DEVOTIONAL QUOTES, DEVOTIONAL WALLPAPERS AND MORE.